भारतेंदु के निबंध

संग्रहकर्ता और संपादक

केसरीनारायण शुक्ल एम्० ए०, डी० लिट्०

अध्यक्ष हिंदीविभाग गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

नन्दकिशोर एंड संस

पोस्टबाक्स नं० १७

चौक, वाराणसी

हिन्दी भाषा।

(खड्ग विलास प्रेस 1890, व्रजरत्नदास जी का कहना है कि इसका पहला संस्करण इसी प्रेस से सं० १८८३ में छपा)

(हिंदी भाषा के विभाग देश देशान्तर की भाषा की कविता आदि का उदाहरण, मिश्रित और शुद्ध हिन्दी का वर्णन)

भाषाओं के तीन विभाग होते हैं यथा घर में बोलने की भाषा कविता की भाषा और लिखने की भाषा। अब पश्चिमोत्तर देश में घर में बोलने की भाषा कौन है यह निश्चय नहीं होता क्यों कि दिल्ली प्रान्त के वा अन्य नगरों में भी खत्रियों वा पछाहीं अगरवालों वा और पछाहीं जातियों के अतिरिक्त घर में हिन्दी कोई नहीं बोलते बरंच यहाँ पर तो कोस कोस पर भाषा बदलती है। इसी बनारस में जो बनारस के पुराने रहवासी हैं उनके घर में विचित्र विचित्र बोलियाँ बोली जाती हैं जैसे पुरबियों की बोली आईला जाईला प्रसिद्ध ही है परन्तु यहाँ के पुराने कसेरे लोग 'बाटः' शब्द का बहुत प्रयोग करते हैं जैसा 'आवत हई' के स्थान पर 'आवत बाटो' 'का करत होवः' वा 'का करल' के स्थान पर 'का करत बाट्य वा बाटो वा बाटः'। इस दशा में बनारस की मुख्य बोली यह और वह बोली है जिसका उदाहरण में नं० ७ कलकत्ते की शोभा में मिलैगा अर्थात् वह पुरबिये बनियों की बोली है० वरंच यह बोली यहाँ के प्रसिद्ध धनिकों के घर में बोली जाती है परन्तु इन दोनों बोलियों को छोड़ कर बनारस में बदमाशों की भाषा अलग ही है जिसमें कितने ऐसे व्यर्थ शब्द हैं जिनका न सिर है न पैर है जैसा झांझ, गोजर इत्यादि० वरन वे जिस ईकारान्त (वा कभी कभी ओकारान्त वा कदाचित् आकारान्त) शब्द के पीछे क लगा देंगे उसका अर्थ गाली होगा। इसका विशेष वर्णन हम काशी की दशा के वर्णन में लिखैंगे पर यहां इतना ही समझ लेना चाहिए कि इन की भाषा भी अब काशी की भाषा में स्वतंत्र हो गई है।

कोई कहते हैं कि काशी की सब से प्राचीन भाषा वह है जो डोम लोग बोलते हैं क्यों कि वे ही यहां के प्राचीन वासी हैं और उनकी भाषा में प्रायः दीर्घ मात्रा होती है। जो हो यह तो सिद्धान्त है कि जो यहाँ के शिष्ट लोग बोलते हैं वह परदेशी भाषा है और यहाँ पश्चिम से आई है। काशी के उस पार ही रामनगर में यहाँ की बोली से कुछ विलक्षण बोली बोली जाती है और वह

पश्चिमोत्तर देश की कविता की भाषा ब्रजभाषा है यह निर्णीत हो चुकी है और प्राचीन काल मे लोग इसी भाषा में कविता करते आते हैं परन्तु यह कह सकते हैं कि यह नियम अकबर के समय के पूर्व नहीं था क्यों कि मुहम्मद मलिक जाइसी और चंद की कविता विलक्षण हो है और वैसे ही तुलसीदास जी ने भी ब्रजभाषा का नियम भंग कर दिया। जो हो मैं ने आप कई बेर परिश्रम किया कि खड़ो बोली में कुछ कविता बनाऊँ पर वह मेरे नित्तानुसार नहीं बनी इस से यह निश्चय होता हैं कि ब्रजभाषा ही में कविता करना उत्तम होता है और इसी से सब कविता ब्रजभाषा में ही उत्तम होती है

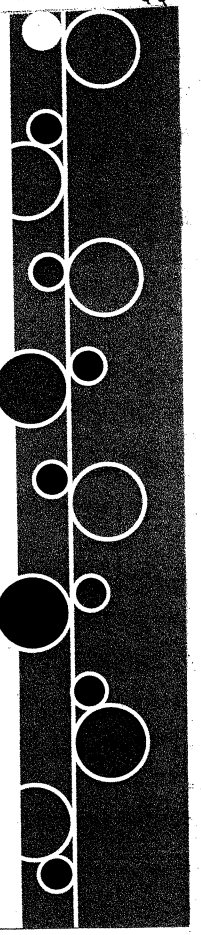

.....नई भाषा की कविता

"भजन करो श्रीकृष्ण का, मिल कर के सब लोग।
सिद्ध होयगा काम और छूटैगा सब सोग॥"

अब देखिये यह कैसी भोंड़ी कविता है मैं ने इस का कारण सोचा कि खड़ी बोली में कविता मीठी क्यों नहीं बनती तो मुझ को सब से बड़ा कारण यह जान पड़ा कि इस में क्रिया इत्यादि में प्रायः दीर्घ मात्रा होती हैं इस्से कविता अच्छी नहीं बनती।

आप लोगों को ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा कि कविता की भाषा निस्सन्देह ब्रजभाषा ही है और दूसरे भाषाओं की कविता इतना चित्त को नहीं

पकड़ती। यदि हमारे पाठक लोग इच्छा करेंगे तो कविता में नायिकाभेद, अलंकार और कवियों के स्वतन्त्र प्रयोग कैसे कैसे बदल गए इन का वर्णन फिर कभी करूँगा।

हिन्दी कविता—संस्कृत यद्यपि परम मधुर है तथापि भाषा भी मधुरई में किसी प्रकार से घट के नहीं है—इस के उदाहरण में हम एक श्रीजयदेव जी की अष्टपदी और एक उस का अनुवाद देते हैं अब हमारे पाठक लोग दोनों भाषा की माधुरी का प्रमाण जान लें।

..... अथ लिखने की भाषा के उदाहरण—

भाषा का तीसरा अंग लिखने की भाषा है और इस में बड़ा झगड़ा है कोई कहता है कि उरदू शब्द मिलने चाहिए कोई कहता है कि संस्कृत शब्द होने चाहिए और अपनी अपनी रुचि के अनुसार सब लिखते हैं और इस के हेतु कोई भाषा अभी निश्चित नहीं हो सकती।

हम सब भाषाओं के नीचे उदाहरण दिखाते हैं॥

वर्षा वर्णन।

नं० १ जिस में संस्कृत के शब्द बहुत हैं।

अहा पर कैसी अपूर्व्व और विचित्र वर्षा ऋतु साम्प्रत प्राप्त हुई है अनवर्त्त आकाश मेघाच्छन्न रहता है और चतुर्दिक कुझ्झटिका पात से नेत्र की गति स्तम्भित हो गई है प्रतिक्षण अभ्र में चंचला पुंश्चली स्त्री को भांति नर्तन करती है और वैसे ही बकावली उड्डीयमाना होकर—इतस्ततः भ्रमण कर रही है मयूरादि अनेक पक्षिगण प्रफुल्लित चित्त से रव कर रहे हैं और वैसे ही दर्दरगण भी पंकाभिषेक करके कुकवियों को भांति कर्णवेधक ढक्का झंकार सा भयानक शब्द करते हैं।

नं० २ जिस में संस्कृत के शब्द थोड़े है।

सब विदेशी लोग घर फिर आए और व्यापारियों ने नौका लादना छोड़ दिया पुल टूट गए बांध खुल गए पंक से पृथ्वी भर गई पहाड़ी नदियों ने अपने बल दिखाए बहुत वृक्ष कूल समेत तोड़ गिराए सर्प बिलों से बाहर निकले महानदियों ने मर्यादा भंग कर दी और स्वतन्त्रता स्त्रियों की भांति उमड़ चली।

नं० ३ जो शुद्ध हिन्दी है।

पर मेरे प्रीतम अब तक घर न आए क्या उस देश में बरसात नहीं होती या किसी सौत के फेरे में पड़ गये कि इधर की सुध ही भूल गए। कहां तो वह प्यार की बातें कहां एक संग ऐसा भूल जाना कि चिट्ठी भी न भिजवाना। हा! मैं

कहां जाऊं कैसी करूं मेरी तो ऐसी कोई मुंहबोली—सहेली नहीं कि उस से दुखड़ा रो सुनाऊं कुछ इधर उधर की बातों ही से जी बहलाऊं।

नं० ४ जिस में किसी भाषा के शब्द मिलने का नेम नहीं है।

ऐसी तो अंधेरी रात उस में अकेली रहना कोई हाल पूछने वाला भी पास नहीं रह रह कर जो घबड़ाता है कोई खबर लेने भी नहीं आता और न कोई इस विपत्ति में सहाय होकर जान बचाता।

नं० ५ जिस में फारसी शब्द विशेष हैं।

खुदा इस आफत से जी बचाये प्यारे का मुंह जल्द दिखाए कि जान में जान आए। फिर वही ऐश को घड़ियां आए शबोरोज दिलबर की सुहबत रहे रंजो गम दूर हो दिल मसरूर हो।

कलकत्ते की शोभा

नं० ६ जिस में अंगरेजी शब्द हिन्दी ही के मिल गए हैं।

वहां हौसों में हजारों बक्स माल रक्खे हैं—कम्पनियों के सैकड़ों बक्स इधर से उधर कुली लोग लिये फिरते हैं लालटेन में गिलास चारों तरफ बल रहे हैं सड़क की लैन सीधी और चौड़ी है पालकी गाड़ी बग्गी चिरिट-फिटिन दौड़ रही हैं रेलवे के स्टेशनों पर टिकट बंट रहा है कोई फर्स्ट क्लास में बैठता है कोई सेकेण्ड में कोई थर्ड में बैठता है ट्रैन को इञ्जिन इधर से उधर खींच कर ले जाती है बड़े से छोटे तक उहदेदार जज मजिस्टर कलक्टर पोस्ट मास्टर डिपटी साहब स्टेशन मास्टर करनैल जनरैल कमानियर किरानी और कांस्टेबल वगैरह चारों ओर घूम रहे हैं कोई कोट पहिने है कोई बूट पहिने है कोई पाकेट में लोट भरे हैं लाट साहिब भी इधर उधर आते जाते हैं डांक दौड़ती है बोट तिरते हैं पादरी लोग गिरजों में क्रिस्तानों को बैबिल सुनाते हैं पंप में पानी दौड़ता है कंप में लंप रौशन हो रही है।

नं० ७ जिस में पुरबियों की बोली वा काशी की देशभाषा है।

क साहेब आप कब्बौं कलकत्ता गये हौ कि नाहीं? जो न गए हो तो एक बेर हमरे कहे से आप ऊ शहर को जरूर देखो देख ही के लायक है आप से हम ओकी तारीफ का करी अपनी आंखी से देखे बिना ओका मजै नहीं मिलता आप तौ बहुत परदेस जाथौ एक बेर ओहरो झुक पड़ो।

नं० ८ जो काशी के अर्धशिक्षित बोलते हैं।

महाराज मैं सच कहता हौं कलकत्ता देखने ही के योग्य है आप देखियेगा तो खुस हो जाइयेगा हम एक दफे गए रहे से ऐसा जी प्रसन्न हो गया कि क्या पूछना है।

नं० ९ दक्षिण के लोगों की हिंदी।

सो तो ठीक है कलकत्ते तो आप कं एक बेर अवश्य जाना हमारे कूं तो ऐसा जान पड़ता है कि जावत् पृथ्वी तल में दूसरा ऐसा कोई नगर ही नहीं है।

नं० १० बंगालियों की हिन्दी।

सच है उधर राजा बाजार का बड़ा बड़ा दोकान है उधर मछुआ बाजार में बहुत अच्छा अच्छा सामान है कहीं गाड़ी खड़ा है कहीं केलो फला है कहीं गोरा की समाज की समाज आती है कहीं अमारा देश का बंगालो बाबू लोगों का पल्टन जाती है के कोम्पानी लोग दीवालिया होया जाता है कहीं मारवाड़ी माल लेकर घर पराता है।

नं० ११ अंगरेजों की हिंदी।

बेशक इस में कुछ शक नहीं कैलकटा देखने का जगह है हम वहां अकसर रहता आप एक बार जाने मांगो वहां जाकर थोड़ा सबुर करो देखो बहुत लोग जाता तो आप घर में पड़ा पड़ा क्यों सड़ता जाओ जाओ हमारा कहने से जाओ।

नं० १२ रेलवे की भाषा। ईष्टइण्डिया रेलवे। इस्तहार—(इस में दो इश्तहार दिये हैं जिन में से एक उद्धृत किया जाता है)।

कजरा स्टेशन में एक मिसत्री जिसका नाम वसी था एक चारपाई नेआ सिलिपर के चोरा कर के बनवाने के वास्ते अगस्त सन १८८३ ई० साल में गिरफतार कीया गेया था और मजिस्ट्रेट साहब ने उस को मोजरिम ठहरा कर एक बरस के वास्ते सख्त मेहनत के साथ कैद किया।

District Engineer's Office Dinapore
17th Aug. 1883

S. Carringlon
Offis. District
Engineer.

हम इस स्थान पर वाद नहीं किया चाहते कि कौन भाषा उत्तम है और वही लिखनी चाहिए पर हां मुझ से कोई अनुमति पूछे तो मैं यह कहूंगा कि नम्बर २ और ३ लिखने के योग्य हैं।

यदि इसका विचार कीजिये कि यह देशभाषा कहां से आई है तो यह निश्चय होता है कि पश्चिम से आई है और पंजाबी व्रजभाषा इत्यादि भाषाओं से बिगड़ कर बनी हैं पर उनका आदि किसी समय में नागभाषा रही हो तो आश्चर्य नहीं।

हरिद्वार।

(१)

(कविवचनसुधा 30 अप्रैल 1871 Vol. III No. 1. P. 10.)

श्रीमान क० व० सु० सम्पादक महोदयेषु

श्री हरिद्वार को रुड़की के मार्ग से जाना होता है रुड़की शहर अंगरेजों का बसाया हुआ है इसमें दो तीन वस्तु देखने योग्य हैं एक तो (कारीगरी) शिल्प विद्या का बड़ा कारखाना है जिस में जल चक्की पवन चक्की और भी कई बड़े २ चक्र अनवर्त खचक्र में सूर्य्य चन्द्र पृथ्वी मंगल आदि ग्रहों की भांति फिरा करते हैं और बड़ी बड़ी धरन ऐसी सहज में चिर जाती हैं कि देखकर आश्चर्य होता है बड़े बड़े लोहे के खम्भे कल से एक छड़ में ढल जाते हैं और सैकड़ों मन आंटा घड़ी भर में पिस जाता है जो बात है आश्चर्य की है इस कारखाने के सिवा यहां सबसे आश्चर्य श्री गंगा जी की नहर है पुल के ऊपर से तो नहर बहती है और नीचे से नदी बहती है यह एक बड़े आश्चर्य का स्थान है इसके देखने से शिल्प विद्या का बल और अंगरेजों का चातुर्य्य और द्रव्य का व्यय प्रगट होता है न जानें वह पुल कितना दृढ़ बना है कि उस पर से अनवर्त कई लाख मन वरन करोड़ मन जल बहा करता है और वह तनिक नहीं हिलता स्थल में जल कर रक्खा है और स्थानों में पुल के नीचे से नाव चलती है यहां पुल के ऊपर नाव चलती है और उसके दोनों ओर गाड़ी जाने का मार्ग है और उस के परले सिरे पर चूने के सिंह बहुत ही बड़े बड़े बने हैं हरिद्वार का एक मार्ग इसी नहर की पटरी पर से है और मैं इसी मार्ग से गया था।।

विदित हो कि यह श्री गंगा जी की नहर हरिद्वार से आई है और इसके लाने में यह चातुर्य किया है कि इसके जल का वेग रोकने के हेतु इस को सीढ़ी की भांति लाए हैं कोस कोस डेढ़ डेढ़ कोस पर बड़े बड़े पुल बनाए हैं वही मानो सीढ़ियां हैं और प्रत्येक पुल के ताखों से जल को नीचे उतारा है जहां जहां जल को नीचे उतारा है वहां वहां बड़े बड़े सीकड़ों में कसे हुए दृढ़ तखते पुल के ताखों के मुँह पर लगा दिये हैं और उनके खींचने के हेतु ऊपर चक्कर रक्खे हैं उन तखतों से ठोकर खाकर पानी नीचे गिरता है वह शोभा देखने योग्य है एक तो उसका महान शब्द दूसरे उस में से फुंहारे की भांति जल का उबलना और छींटों का उड़ना मन को बहुत लुभाता है और जब कभी जल विशेष लेना होता है तो तखतों को उठा लेते हैं फिर तो इस वेग से जल गिरता है जिसका वर्णन नहीं हो सकता और ये मल्लाह दुष्ट वहां भी आश्चर्य करते हैं कि उस जल पर से